M.A - SEMESTER III Paper - CC-X

अर्धमागधी आगमसाहित्य

इकाई - 2 उत्तराध्ययन - तेईसवाँ अध्ययन - केशी-गौतम

Q-I उत्तराध्ययन सूत्र में तेईसवाँ केशी गौतम के संवाद का संक्षिप्त सारांश लिखें।

Ans - प्राकृत आगम साहित्य में "उत्तराध्ययन सूत्र" का तेईसवाँ अध्ययन है। इस अध्ययन का नाम केशी-गौतमीय है। उत्तराध्ययन सूत्र विषय-विवेचन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ माना गया है। यह एक-एक धार्मिक प्रवृति की मूल सूत्र ग्रंथ है। इस ग्रंथ में भगवान महावीर एवं पार्श्वनाथ की वाणी का वर्णन पाया जाता है। तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के परम पुत्र केशी कुमार और चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के पट्टशिष्य गौतम गणधर के साथ श्रावस्ती नगरी में जो संवाद हुआ था उसी का वर्णन इस अध्ययन में बहुत रोचक ढंग से हुआ है।

जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर से ढाई सौ वर्ष पहले ही मोक्ष प्राप्त किये थे। किन्तु उनके धर्मशासन काल के परम्परा को मानने वाले कई श्रमण और श्रमणोपासक विद्यमान थे, जो यदा-कदा भगवान महावीर से तथा उनके श्रमणों से मिला करते थे। पार्श्वनाथ के श्रमणों ने उन लोगों से मिलकर विभिन्न तत्वों की चर्चा करके तथा संतुष्ट होकर अपनी पूर्व परम्परा को छोड़कर भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित पंच महाव्रत धर्म को स्वीकार कर लिया।

प्रस्तुत अध्ययन में यही वर्णन किया गया है कि केशी और गौतम की विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई

Scanned with CamScanner

और अंत में केशी श्रमण अपने शिष्यों सहित भगवान महावीर के पंच महाव्रत रूप धर्म तीर्थ में सम्मिलित हो जाते हैं। दोनों के बीच में हुए तत्व चर्चा का वर्णन प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत वर्णित है।

एकबार केशी श्रमण अपनी शिष्यमण्डली के साथ श्रावस्ती नगरी में पधारे तथा तिन्दुक उद्यान में ठहरे। संयोगवश उसी समय गौतम गणधर भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ उसी नगरी में पधारे लेकिन वे लोग कोष्ठक उद्यान में ठहरे। जब दोनों के शिष्य भिक्षाटन करने नगरी में जाते तब दोनों अपनी अपनी परम्पराओं के क्रियाकलाप में समानता तथा वेष में असमानता देखकर आश्चर्य व एवं जिज्ञासा उत्पन्न ~~हुई~~ हुई। दोनों के शिष्यों ने अपने-अपने गुरुजनों से कहा।

अतः दोनों पक्ष के गुरुओं ने निश्चय किया कि हमारे पारस्परिक मतभेदों तथा आचार भेदों के विषय में एक जगह बैठकर चर्चा करली जाए। केशी कुमार श्रमण पार्श्व परम्परा के आचार्य होने के नाते गौतम से श्रेष्ठ थे। इसलिए गौतम ने विनय मर्यादा की दृष्टि से विचार करके, अपने शिष्य समूह सहित तिन्दुक उद्यान में पधारे। जहाँ केशी श्रमण विराजमान थे। गौतम को आये देखकर केशी कुमार ने उनका आदर सत्कार किया। फिर क्रमशः बारह प्रश्नोत्तरों में उनकी धर्मचर्चा की बात चली है। सबसे मुख्य प्रश्न दोनों के परम्परागत महाव्रत धर्म, आचार और वेष में जो अन्तर

धर्म उसी के संबंध में गौतम गणधर ने आचार विचार अथवा धर्म एवं वेश के संबंध में अन्तर की मूल कारण साधकों की प्रज्ञा के विस्तार पूर्वक बतलाया। बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार भगवान महावीर देश का कल्याण अनुसार धर्म साधना का व्यावहारिक विशुद्ध रूप प्रस्तुत किया है।

इसके पश्चात केशीकुमार द्वारा शत्रुओं, बन्धनों, लता, अग्नि दुष्ट अश्व मार्ग कुमार्ग आदि रूपकों से लेकर आध्यात्मिक विषय के संबंध में पूछे जाने पर गौतम स्वामी ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर विस्तार पूर्वक दिया। अतः इस लोक में दिव्य प्रकाश तथा ध्रुव निराबाध स्थान के विषय में केशी कुमार सही सही उत्तर दिये। और केशी कुमार अपने शिष्यों सहित शुद्ध श्रद्धा पूर्वक भगवान महावीर के पंचमहाव्रत रूप धर्म को स्वीकार किया। वास्तव में इस महत्वपूर्ण संवाद से युग-युग के साधना संज्ञाओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है।